

# विकृतियों को दिखाना कलाकार का काम नहीं



विकृतियों को दिखाना कलाकार का काम नहीं है। कलाकार को चाहिए कि वह भारतीय संस्कृति को ध्यान में रखते हुए सही ढंग से अपनी कला को प्रदर्शित करे। यह बात विश्वप्रसिद्ध चित्रकार सैयद हैदर रजा ने उन चित्रकारों के बारे में कही जो अपनी पहचान बनाने की धुन में कला को विकृत रूप में परोसने से नहीं हिचकते। फ्रांस के पेरिस शहर को अपनी कर्मभूमि बना चुके श्री रजा शुक्रवार को कुछ समय के लिए शहर में रुके....

**स** किट हाउस में पत्रकारों से एक संक्षिप्त मुलाकात में उन्होंने अपने चित्रकारी के शौक के साथ ही कुछ अन्य बातें की। श्री रजा ने कहा कि चित्रकार के सामने कई चुनौतियां होती हैं लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि अपनी पहचान बनाने के लिए कला की मूल भावना को ही दांव पर लगा दिया जाए।

1922 में नरसिंहपुर के बावरिया गांव में जन्में विश्व विख्यात चित्रकार सैयद हैदर रजा भी महाकोशल की माटी के ही एक सपूत हैं। श्री रजा ने बताया कि जब मैं पांचवी कक्षा में था तब एक दिन मेरे शिक्षक ने मुझे सजा के तौर पर कक्षा के बाहर खड़ा कर दिया

और बोर्ड पर एक 'डॉट' बना कर कहा कि इसे गौर से देखते रहो। मैं सुबह से शाम तक उस बिन्दु को देखता रहा और देखते ही देखते मैंने उस बिन्दु से कई मुद्राएं बनाली। तब से मेरी सारी पेंटिंग्स बिन्दु पर ही केंद्रित हो गई। शिक्षक की उस सजा से ही मुझे प्रेरणा मिली। श्री रजा कई बार अपनी पेंटिंग्स को निखारने के लिए विदेश भी गए। श्री रजा ने बताया कि 1952 में मैं पहली बार कला के केंद्र कहे जाने वाले फ्रांस गया था जहां मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। तभी से मैं पेरिस में बस गया लेकिन मुझे भारत आकर बहुत खुशी मिलती है। कला को समर्पित श्री रजा को 1996 में 'पद्म श्री' और 2006 में 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया जा चुका है। श्री रजा मंडला जाने से पहले कुछ समय के लिए यहाँ रुके थे।

**विश्व प्रसिद्ध  
चित्रकार  
सैयद हैदर  
रजा शहर में**